

सरकार की सजगता व तात्कालिक कदमों, कोरोना योद्धाओं के जज्बे और जनता के सकारात्मक प्रतिसाद से हम बड़ी तबाही टालने में कामयाब होते दिख रहे हैं। बीते साल ग्लोबल हेल्थ सिक्योरिटी इंडेक्स में भारत की महामारी से लड़ने की क्षमता को 57वां स्थान दिया गया था फिर भी हम बेहतर करते नज़र आ रहे हैं। लेकिन कोविड 19 के प्रकोप ने आईना दिखाया है कि मेडिकल टूरिज्म व पांच सितारा चिकित्सा प्रणाली से देश का भला नहीं होगा, हमें चिकित्सा सिस्टम की खामियों को तलाशकर उन्हें दूर करना होगा।



कोरोना ने दिखाया आईना

अभिषेक कुमार सिंह

हमें कोविड-19 नामक महामारी पैदा करने वाले वायरस नोबेल कोरोना का इस मायने में श्रृंखल मनाना चाहिए कि उसने अपनी पैदावार के लिए चीन को चुना, भारत को नहीं। हमें इसका भी श्रृंखल मनाना चाहिए कि हमारी सरकार ने पूरे देश में लॉकडाउन लागू करने का फैसला लेने में अमेरिका, ब्रिटेन, स्पेन, फ्रांस, इटली जैसे कई विकसित और साधन-संपन्न देशों की तरह कोई ज्यादा विलंब नहीं किया। हमें इसका भी श्रृंखल मनाना चाहिए कि तमाम अशिक्षा, कुछ तबकों की हेठी और वायरस फैलाने की ज़िद में की गई चंद मूर्खता भरी हरकतों के बावजूद डॉक्टरों, नर्सों और असंख्य चिकित्साकर्मियों ने मास्क और पीपीई जैसे तमाम साधनों के अभाव के बावजूद इस महामारी से लड़ने का संकल्प दिखाया। अगर ये सब बातें हमारे पक्ष में नहीं होतीं, तो इसका अंदाज़ा लगाया जा सकता है कि ग्लोबल हेल्थ सिक्योरिटी इंडेक्स, 2019 की गंभीर संक्रामक रोगों और महामारी से लड़ने संबंधी रैंकिंग में दुनिया के 57वें नंबर पर आने वाले देश भारत में कोरोना संक्रमितों और इससे हुई मौतों का आंकड़ा अखिर कितना होता।

जनता के जज्बे को सलाम

यह अनगिनत पुलिसकर्मियों और मदद करने को उठे लाखों हाथों और ताली-थाली बजाने व दीप प्रज्ज्वलित करने वाली जनता का सराहनीय जज्बा ही है। जिसने फिलवक्त एक लाइलाज महामारी को भारत में भयानक त्रासदी में बदलने से रोक रखा है। निश्चय ही हमें इस जज्बे को सलाम करना चाहिए पर क्या यह एक बड़ा मौका भारत की स्वास्थ्य सेवाओं की मौजूदा स्थिति का आकलन करने का नहीं है। हमारे देश की वे स्वास्थ्य सेवाएं, जो पिछले डेढ़-दो दशकों में पंचतारा अस्पतालों के बल पर अपेक्षाकृत सस्ता लेकिन बेहतर इलाज खोजने वाले दुनिया भर के मरीजों के लिए एक बड़ा आश्वासन और मेडिकल टूरिज्म जैसे मुहावरे का कारण बन गई हैं, देश की बड़ी आबादी की सेहत संबंधी जरूरतों के सामने ऊंट के मुंह में जीरा समान हैं। यही नहीं, अगर कोई बड़ी त्रासदी न हो, तो हमारा चिकित्सा तंत्र आम मरीजों का भयानक आर्थिक दोहन ही करता नज़र आता है और उसे मरीजों के मरने-जीने से ज्यादा फिक्र अपनी कमाई की होती है। हम इसे लेकर आश्वस्त हो सकते हैं कि कोरोना वायरस का संक्रमण तो धीरे-धीरे अपनी गति को प्राप्त हो जाएगा, लेकिन आम मरीजों का खून चूसने वाले मेडिकल सिस्टम में क्या आम बीमारियों के सस्ते इलाज और किसी महामारी को दरवाजे पर रोक लेने वाली समझ के लिए कभी कोई जगह बन पाएगी?

चिकित्सा तंत्र की कमियां

असल में, कोरोना वायरस का मौजूदा प्रकरण हमारे चिकित्सा तंत्र की सेहत को जांचने का एक अहम आधार बन गया है। इसने भारत की चिकित्सा व्यवस्था की वे सारी खामियां एक झटके में उजागर कर दी हैं, जिन पर खुद डॉक्टर, अस्पताल और यहां तक कि सरकारें भी तमाम उदाहरण सामने आने के बाद भी निगाह डालने से बचने का प्रयास करती रही हैं। नजड़ें चुराने की इसी अदा का नतीजा है कि जब कोरोना का संक्रमण रोकने की बात आई तो सरकार को पहला उपाय ‘जनता कर्फ्यू’ और ‘थाली बजाने’ के रूप में

नज़र आया। हम यह नहीं कह सकते कि सरकार को चिकित्सा संबंधी कमजोरियों का अहसास नहीं है। बेशक, ये सारी बातें उसकी निगाह में हैं, और शायद इन्हीं खामियों का आकलन करते हुए सरकार ने अपनी ओर से इलाज के प्रबंध करने से पहले जनता कर्फ्यू का आयोजन करते हुए इसकी संभावना टटोल लेना चाहा कि मास्क, सैनिटाइज़र, वेंटिलेटर, दवाओं और मरीजों के टेस्ट व आईसीयू के नाकाफी इंतज़ामों के लिए क्या वह अपनी चौतरफा आलोचनाओं से कुछ राहत पा सकती है या नहीं। पर जनता की सेहत और स्वास्थ्य तंत्र की चुनौतियों को लेकर हर स्तर पर इच्छाशक्ति का अभाव ही दिखता रहा है। हम भले ही इस सूचना पर इतरा लें कि कोरोना के हमले ने अमेरिका, ब्रिटेन, रूस, जर्मनी, जापान जैसे उन सारे विकसित देशों की हालत पतली कर दी है। लेकिन जिस तरह से कोरोना के सामने परस्त अमेरिका ने भारत से इसके इलाज में मददगार दवा हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन की खेप मंगाई है, उससे भी हमारे देश में कई लोग यह सोचकर अपनी पीठ थपथपा सकते हैं कि जिस बीमारी के सामने महाशक्ति देश हॉफ गया है, हमारे आबादी बहुल देश में उस स्तर का संकट पैदा नहीं हुआ।

कम्युनिटी स्प्रेडिंग का खतरा

कोरोना से निपटने में एक विकसित देश और भारत जैसे विकासशील देश के हेल्थ इंफ्रास्ट्रक्चर में अंतर साबित करने वाला एक आंकड़ा हाल में इससे जुड़ी जांच के संबंध में सामने आया है। आठ अप्रैल 2020 को प्रकाशित समाचारों के मुताबिक अमेरिका में 16 लाख लोगों की कोरोना वायरस संबंधी जांच की जा चुकी थी। जबकि भारत में अमेरिका से कई गुना ज्यादा आबादी है और कम्युनिटी स्प्रेडिंग का खतरा यहां भी काफी ज्यादा है, लेकिन जांच में हमारा देश काफी पीछे है। आईसीएमआर के मुताबिक भारत में कोरोना वायरस संक्रमण का पता लगाने के लिये (लेख लिखे जाने तक) कुल 1,21,271 लोगों की जांच की गई है। यूं खुद की तारीफों और आलोचनाओं के कई और बिंदु हो सकते हैं। पर अभी का सच यह है कि कोरोना वायरस के प्रसार ने भारत को अपने स्वास्थ्य ढांचे की खामियों पर नज़र डालने और जितना जल्दी हो सके, उन्हें दूर

चर्चा में मास्क और पीपीई किट : कोरोना के साथ-साथ इधर पूरी दुनिया में चेहरे पर लगाए जाने वाले मास्क और पर्सनल प्रोटेक्शन इक्विपमेंट्स (पीपीई) किट की काफी चर्चा रही है। आम लोग तो खुद को मास्क और ग्लव्स (दस्तानों) के जरिए कोरोना संक्रमण से बचा सकते हैं, लेकिन डॉक्टर, नर्स, कैंपाउंडर और उन चिकित्साकर्मियों के लिए इस संक्रमण से खुद को महफूज रखना काफी ज्यादा चुनौतीपूर्ण है क्योंकि उन्हें हर वक्त कोरोना संक्रमित मरीजों के सीधे संपर्क में रहना पड़ता है। ऐसे में सभी चिकित्साकर्मियों के लिए जरूरी है कि वे सिर से पांव तक ढकने वाली पीपीई किट पहनें जो उन्हें संक्रमण से बचा सके। पीपीई किट में आम तौर पर मास्क, ग्लोव्स, गाउन, ऐपन, फेस प्रोटेक्टर, फेस शील्ड, स्पेशल हेलमेट, रेस्पेरेटर्स, आई प्रोटेक्टर, गॉगल्स, हेड कवर, शु कवर, रबर बूट्स आदि चीजें शामिल होती हैं। ऐसा दावा है कि दुनिया में कई डॉक्टरों और चिकित्साकर्मियों की मौत ऐसी ही पीपीई किट के अभाव में हो गई। मास्क और पीपीई किट को लेकर मारामारी सिर्फ भारत में नहीं हो रही है, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर कई देशों के बीच भी इन्हें लेकर तनावनी है। जैसे हाल में जर्मनी ने अमेरिका पर मास्क की ‘पाइरेसी’ का आरोप लगाया। जर्मनी के मुताबिक दो लाख मास्क की आपूर्ति बैकोंक एयरपोर्ट से कार्गो विमान के जरिए बर्लिन को की जानी थी, लेकिन वे जिस अमेरिकी कंपनी एम को यह ऑर्डर दिया गया था, उसने वे मास्क रातों-रात अमेरिका पहुंचा दिए। जर्मनी ने इसे सीधे-सीधे चोरी का मामला बताया। इसी तरह के एक मामले में फ्रांस ने आरोप लगाया कि मेडिकल किट्स की आपूर्ति के लिए डोनाल्ड ट्रंप भारी-भरकम ‘घूस’ दे रहे हैं।

करने के जतन के अवसर पैदा कर दिये हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं के लिये बजट

सेहत के मोर्चे पर खामियों के कई स्तर हैं, जिनमें पहली बात स्वास्थ्य की मद में बजट के जरिए किए जाने वाले खर्च से निर्धारित होती है। इस बारे में तथ्य यह है कि हमारी सरकार ने कुल जीडीपी का मात्र 1.3% स्वास्थ्य सेवाओं पर खर्च करने का प्रावधान बजट में किया है। देश की एक अरब 37 करोड़ की आबादी और उसकी स्वास्थ्य संबंधी जरूरतों को देखते हुए यह रकम नगण्य ही है। नेशनल हेल्थ प्रोफाइल 2019 के आंकड़ों से पता चलता है कि कम बजट में मिलने की वजह से देश में जरूरत के अनुसार सरकारी अस्पताल नहीं खोले जा रहे हैं। आकलन है कि भारत में केंद्र, राज्य और स्थानीय निकायों द्वारा संचालित तकरीबन 26 हजार सरकारी अस्पताल हैं। इन सरकारी अस्पतालों में पंजीकृत नर्सों और दाइयों की संख्या लगभग 20.5 लाख और मरीजों के लिए बिस्तरों की संख्या 7.13 लाख के करीब है। आंकड़ों की तुलना करने से पता चलता है कि देश की एक लाख की आबादी के लिए महज दो अस्पताल उपलब्ध हैं। इसी तुलना में प्रत्येक 610 मरीजों पर एक नर्स और प्रत्येक 10 हजार लोगों के लिए अधिकतम छह (6) बिस्तर उपलब्ध हैं। सरकारी अस्पतालों में जरूरी दवाओं और चिकित्सकों की भारी कमी है, जिसकी वजह से डॉक्टरों और नर्सों पर काम का भारी दबाव रहता है।

दवाइयों की गुणवत्ता पर भी सवाल

2017 में केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्रालय के एक सर्वे में यह बात सामने आई कि सरकारी अस्पतालों में मिलने वाली 10 फीसदी दवाइयां घटिया किस्म की होती हैं। लोगों को सस्ती दवाएं उपलब्ध कराने के लिए सरकार ने देश भर में तीन हजार जनऔषधि दुकानें खोलीं हैं। लेकिन यहां दवाइयां या तो खत्म हो जाती हैं और

समय पर मिलती नहीं,

या उनकी

क्वालिटी

अच्छी नहीं

होती। नई

स्वास्थ्य नीति

में सबको

स्वास्थ्य

सुविधा

उपलब्ध कराने

की बात कही गई है पर यह

तभी संभव है जब सरकार अपने स्वास्थ्य तंत्र

को देश की जरूरत के मुताबिक ढालने का मन बनाए।

मुकाबले की तैयारी

जहां तक बात कोरोना के कारण पैदा हुए संकट से निपटने की है, तो इस मामले में मामूली चूक भी हर किसी के लिए भारी पड़ रही है। यह चूक कई स्तरों पर हुई। जैसे, चीन के वुहान शहर से निकला वायरस दुनिया के अन्य देशों को प्रभावित न कर सके, तो इसकी तैयारी प्रायः कहीं नहीं थी। यह दिसंबर, 2019 में ही पता चल गया था कि कोरोना की चपेट में आकर चीनी नागरिकों की बड़ी संख्या में मौत हो रही है, लोग सड़कों पर चलते-फिरते ही संक्रमण की चपेट में आ रहे हैं पर उस वक्त न तो चीन ने दुनिया से इस मामले में कोई मदद मांगी और न ही विश्व ने वायरस को चीन से बाहर आने से रोकने के लिए हवाई यातायात को बंद करने व आने वाले यात्रियों की एयरपोर्ट पर ही थर्मल स्क्रीनिंग आदि उपायों को अपनाने में तेजी दिखाई। अमेरिका का ही उदाहरण लें, तो दावा है कि कोरोना वायरस के हमले पर चीन के खुलासे के बाद ट्रंप प्रशासन ने जब तक चीन से आने वाली हवाई उड़ानों पर प्रतिबंध घोषित किया, उससे पहले ही चार लाख 30 हजार लोग चीन से 1300 सीधी उड़ानों के जरिए अमेरिका पहुंच चुके थे। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपनी अर्थव्यवस्था के गत में चले जाने के भय से लॉकडाउन जैसे उपाय से परहेज बरता। इसी का नतीजा है कि 8 अप्रैल 2020 तक अमेरिका में कोरोना संक्रमितों की संख्या चार लाख से ज्यादा और मौतों की संख्या करीब 13 हजार हो चुकी थी।

सोशल डिस्टेंसिंग का कायदा

एक तथ्य के मुताबिक कोरोना महामारी की चेतावनियों को नजरअंदाज कर टेक्सास से करीब 70 युवा सैर-सपाटे को निकल गए और जब ये युवा वापस लौटे तो इनमें से 44 कोरोना संक्रमित (पॉजिटिव) हो चुके थे। अमेरिका से पहले इटली, ईरान, फ्रांस, स्पेन ने भी इसी तरह की गलतियां कीं जिसका परिणाम वहां बड़े पैमाने पर हुई मौतों के रूप में निकल रहा है। हालांकि भारत सरकार ने हवाई, रेल और बस यातायात रोककर और चंद आवश्यक सेवाओं को छोड़कर 22 मार्च के बाद से संपूर्ण लॉकडाउन का ऐलान कर दिया, लेकिन इसके शुरुआती दिनों में आर्थिक हालात से घबराए हजारों मजदूर और छोटे-मोटे पेशे वाले लोगों ने शहरों से बड़े पैमाने पर अपने मूल स्थानों के लिए कूच किया। इससे सोशल डिस्टेंसिंग का जरूरी कायदा तो खंडित हुआ, लेकिन सरकारों का ऐसे लोगों को एक स्थान पर अगले 21 दिनों के लिए रोकने का औचित्य सही साबित होते प्रतीत नहीं हुआ। हालांकि इनमें से बहुतेरे लोग पैदल ही सैकड़ों किलोमीटर की दूरी नापकर अपने मूल स्थानों को पहुंच गए और गांव के बाहर उन्होंने खुद को आइसोलेशन में रखने का इंतज़ाम कर लिया लेकिन काफी बड़ी संख्या में लोगों को बसों में भरकर पहुंचाया गया।

बहरहाल, अभी देश के सामने यह एक बड़ा सवाल है कि क्या 21 दिन का लॉकडाउन भारत को कोरोना वायरस से राहत दिलाने में कामयाब होगा?

दवा निर्यात में भारत की हिस्सेदारी

जब कोई मर्ज कोरोना वायरस जैसी तेजी के साथ संक्रामक ढंग से फैलने वाला हो तो चुनौती काफी बड़ी हो जाती है। ऐसे में इलाज के कई नुस्खे आजमाए जा रहे हैं। जैसे, कोरोना के संबंध में मलेरिया के लिए



इस्तेमाल की जाने वाली दवा हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन को बचाव में मददगार पाया गया। उल्लेखनीय है कि भारत हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन का सबसे बड़ा उत्पादक देश है, इसलिए अमेरिका में कोरोना के बढ़ते मामलों को देखते हुए डोनाल्ड ट्रंप ने भारत से बड़ी मात्रा में इस दवा को भेजने की मांग की। चूंकि भारत ने देश में मलेरिया की रोकथाम के मकसद से इस दवा के निर्यात पर प्रतिबंध लगा रखा था, इसलिए ट्रंप दवा नहीं भेजने की सूरत में धमकाने से भी बाज नहीं आए। हालांकि भारत ने मामले में सदाशयता दिखाते हुए ट्रंप की चेतावनी के 6 घंटे बाद दवा हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन और पैरासिटामोल के निर्यात को सशर्त मंजूरी दे दी। ध्यान रहे कि दुनिया में आपूर्ति होने वाली कुल हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन में भारत की हिस्सेदारी 70 फीसदी है। देश में हर महीने 40 टन हाइड्रोक्सीक्लोरोक्वीन (एचसीक्यू) उत्पादन की क्षमता है। यह 200-200 एमजी के करीब 20 करोड़ टैबलेट के बराबर बैठता है।



दवाओं- उपकरणों की उपलब्धता

यह तो स्पष्ट है कि सटीक दवा या वैकसीन की अनुपस्थिति में कोरोना वायरस से बचाव का मामला काफी रोदिव्ध बना हुआ है। वैकल्पिक दवाओं को आजमाने के साथ कोरोना की रैपिड टेस्टिंग किट, मास्क, पीपीई और वेंटिलेटर आदि के प्रबंधों को टटोला जा रहा है। हमारे देश में यह दावा किया जा रहा है कि इतनी बड़ी आबादी के लिहाज से सिर्फ 40 हजार वेंटिलेटरों की मौजूदगी एक खतरनाक लक्षण है। खास तौर से ऐसी दश में, जबकि संक्रमित मरीजों की संख्या अमेरिका, इटली, स्पेन आदि की तरह लाखों में पहुंच जाए तो संसाधनों का अभाव भारत के सामने बेहद बड़ी चुनौती बन जाएगा। इस बारे में हालांकि भारत सरकार ने आश्वस्त किया है कि खास तौर से कोरोना से निपटने के उसके प्रबंधों में फिलहाल कोई कमी नहीं है। वैकल्पिक दवाएं एवं उर्वरक मंत्री डी.वी. सदानंद गौड़ा ने हाल में अपने एक टवीट से साफ किया है कि पिछले कुछ दिनों में भारत सरकार ने कार्गो उड़ानों के जरिए साढ़े 15 टन से ज्यादा जरूरी चिकित्सा सामग्रियों की दुलाई की है ताकी चिकित्सा आपूर्तियों की उपलब्धता बनी रहे। इसके अलावा औषधियों और चिकित्सा-अर पताल उपकरणों जैसी आवश्यक वस्तुओं के विनिर्माण के उद्देश्य से एस्ईजेड की 200 से ज्यादा इकाइयों को चालू हालत में रखा गया है।

इस बैसाखी भीतर हो उत्सव

कल बैसाखी है। खालसा पंथ की स्थापना का दिन। उत्सव का अवसर है, लेकिन सामाजिक दूरियों की दरकार भी है। ऐसे में यह सिख धर्म के दो बहुत सुंदर सिद्धांतों- ‘ईश्वर के नाम का चिंतन’ और ‘सेवा’ का अनुसरण करने का अच्छा अवसर है...

श्रीश्री रविशंकर

गुरु नानक देव जी का जीवन विशुद्ध प्रेम, ज्ञान और निर्भीकता से परिपूर्ण था। बैसाखी के अवसर पर हम स्वयं में मौजूद इन अद्भुत गुणों का उत्सव मनाते हैं। सिख परंपरा में बहुत सुंदर अभिवादन है- ‘सत श्री अकाल’। सत का अर्थ है सत्य, श्री का अर्थ है समृद्धि और अकाल का अर्थ है शाश्वत। यानी सत्य एक सच्ची समृद्धि है, जो शाश्वत है। शाश्वत असीमित दिव्यता ही सत्य है और यही सच्ची समृद्धि है। पंजाब में बैसाखी खालसा दिवस के रूप में मनाई जाती है। इस दिन गुरु गोबिंद सिंह जी ने धर्म की रक्षा, दुष्टों के नाश और मानव मूल्यों के उत्थान के लिए खालसा पंथ की स्थापना की थी। गुरु गोबिंद सिंह का संदेश आज के समय में बहुत महत्वपूर्ण और उपयोगी है। उन्होंने कहा था, ‘आपको शक्ति-युक्त होना चाहिए और साथ ही हृदय से कोमल भी। आपको भीतर से आध्यात्मिक होना चाहिए। एक संत सिपाही बनो।’ यानी एक संत बनो और साथ ही एक योद्धा भी बनो। इससे उनका अर्थ था कि तुम अन्याय के विरुद्ध खड़े हो जाओ। आप केवल एक संत बने रहकर यह नहीं कह सकते, ‘ठीक है, जो हुआ, उसे होने दो!’ आपको अन्याय के विरुद्ध खड़े होना चाहिए और साथ ही साथ आपको भीतर से एक संत के समान करुणामय भी होना चाहिए।

बैसाखी उत्सव का अवसर है। उत्सव मन की एक स्थिति है, जिसे किसी संसाधन की आवश्यकता नहीं होती। आप लॉकडाउन के समय में भी उत्सव मना सकते हैं। एक करुणामय कार्य और मनन के एक क्षण के साथ आप घर में ही उत्सव मना सकते हैं। जीवन में उत्सव मनाने के लिए, आपको



आत्मा का स्वभाव है उत्सव मनाना

उत्सव मनाने के लिए कोई भी बहाना अच्छा है। उत्सव दो प्रकार का होता है- एक, धन्यवाद देना, ईश्वर के प्रति कृतज्ञता की अभिव्यक्ति। और दूसरा, यह जानते हुए कि जीवन शाश्वत है, भूतकाल को छोड़ देना और आगे बढ़ना। आत्मा का स्वभाव उत्सव मनाना है। उत्सव संकट के पश्चात विषाद से बाहर निकलने की सबसे अच्छी औषधि है। उत्सव में आप केवल पार्टी नहीं मना रहे होते। जब इसके साथ पवित्रता जुड़ जाती है, तब उत्सव पूर्ण बन जाता है। इसमें तन, मन और आत्मा आनंदित होते हैं। यदि कोई व्यक्ति केवल अपने सुख के लिए उत्सव मना रहा है, तो उसे आत्मरलानि होनी चाहिए। यदि उत्सव का लक्ष्य अपने आसपास के लोगों के हृदय और मन का उत्थान और उनको एक करना है, यदि उत्सव उन्हें भूतकाल में हुए मानसिक आघात को भुला देने और भविष्य में आशा की किरण जगाने में मदद करने का है, यदि आपके उत्सव का लक्ष्य समाज का उत्थान करने का है, तब आपको आत्मरलानि कभी भी नहीं होगी। इस प्रकार का उत्सव सेवा है। यह पवित्र है। अपने उत्सव को केवल अपने लिए सुखदायक बनाने के बजाय, इसे समाज के लिए पवित्र अर्पण बनाएं। जब उत्सव में पवित्रता और प्रार्थना का रंग होता है, तो यह गहरा एवं गरिमामय बन जाता है। यह केवल मन के लिए मनोरंजन या शरीर के लिए उत्साह नहीं होता, बल्कि यह आत्मा के लिए पोषण होता है।

आपसे प्रेम करते हैं ईश्वर : एक निष्ठावान मुस्कान के साथ शुरुआत करें। यह मुस्कान तभी आती है, जब आप यह जान जाते हैं कि ईश्वर आपसे बहुत प्रेम करते हैं। यदि आप यह नहीं जानते कि ईश्वर आपसे प्रेम करते हैं, तब जीवन का उत्सव नहीं मना पाते। आप असुरक्षा की भावना में जीते हैं। असुरक्षा की भावना के कारण लालच आता है। और लालच के कारण स्वार्थीपन आता है। स्वार्थीपन के कारण क्रोध आता है। और क्रोध के कारण वासना उत्पन्न होती है। और वासना से दुःख उत्पन्न होता है। ये एक शृंखला में एक-दूसरे के पीछे रहते हैं।

कथा सार

ताड़का को दंडित करना नहीं चाहते थे श्रीराम

दुर्गेश मिश्र

भगवान श्री राम ने अपने पूरे जीवन काल में एक ही नारी का वध किया, वह भी मुनि विश्वामित्र की आज्ञा से। वह थी राक्षसी ताड़का। श्री वाल्मीकि रामायण में इसका उल्लेख है। अयोध्या से मुनि विश्वामित्र के साथ श्री राम और लक्ष्मण गांधीपुरी (आज का गाजीपुर) होते हुए ब्यान्नसर अथवा चरित्रवन (आज का बिहार प्रांत का बक्सर) पहुंचते हैं। इस जंगल के रास्ते में वह बड़े भयानक पद चिन्ह देखकर पूछते हैं- गुरुदेव यह किसके पद चिन्ह हैं। तब विश्वामित्र कहते हैं छह कोस तक फैले इस निर्जन वन में ताड़का नाम की राक्षसी का एकाधिकार है। अगस्त्य मुनि के शाप से राक्षसी बनी ताड़का और उसके मारीच की विनाश लीला के कारण उजाड़ बने इस वन में आने वाले किसी भी मनुष्य को वह जीवित नहीं छोड़ती। इस पर भगवान श्री राम कहते हैं गुरुदेव महिलाएं तो बहुत कोमल हृदय और कोमलांगी होती हैं, फिर ताड़का में हजार हाथियों का बल आया कैसे। इस पर मुनि विश्वामित्र ताड़का के जन्म से लेकर राक्षसी बनने तक की कथा श्री राम को सुनाते हैं। वह कहते हैं ताड़का ने अपने पति सुंदर की मृत्यु व खुद के कुरूप होने का प्रतिशोध लेने के लिए अगस्त्य ऋषि के आश्रम को तहस-नहस कर दिया था।

कथा सुनाते हुए विश्वामित्र प्रभु राम को ताड़का का वध करने को कहते हैं। विश्वामित्र के बार-बार कहने पर श्री राम कहते हैं- 'महामुने भला मैं इसे कैसे मार सकता हूं। यह नारी है और नारी का वध करना रघुकुल रीति के विपरीत है। इस पर विश्वामित्र ने उन्हें राजधर्म की शिक्षा देते हुए कहा- 'प्रजापालक नरेश को प्रजाजनों की रक्षा के लिए क्रूरतापूर्ण अथवा क्रूरता रहित, पातकयुक्त या सद्योष कर्म भी करना पड़े, तो करना चाहिए। जिनके ऊपर राज्यपालन का भार है उनका तो यह सनातन धर्म है। अतः हे रघुनंदन! एक हजार हाथियों के बल वाली ताड़का महापापिनी है। उसे मार डालो।'

राम का संशय दूर करते हुए विश्वामित्र ने आगे कहा- 'पुराने समय में विरोचन की पुत्री सारी पृथ्वी का नाश करना चाहती थी, उससे रक्षा के लिए इंद्र ने उसका वध कर डाला था। ऐसे ही शुक्राचार्य की माता और भृगु की पत्नी त्रिभुवन को इंद्र से शून्य कर देना चाहती थी। भगवान विष्णु ने उसे दंडित किया था। अतः हे रघुनंदन तुम भी मेरी आज्ञा से इस राक्षसी को मार डालो।'

ताड़का संहार से पहले श्री राम ने कहा- 'हे मुनिश्वर! अयोध्या में मेरे पिता महाराज दशरथ ने अन्य गुरुजनों के बीच मुझे यह आदेश देते हुए कहा था कि पुत्र! तुम पिता के वचनों का मान रखने के लिए कुशिकनंदन विश्वामित्र की आज्ञा का पूर्णतः पालन करना। इसलिए, मैं पिता के उपदेश और आपको आज्ञा से ताड़का का वध अवश्य करूंगा।

वाल्मीकि रामायण के बालकांड में उल्लेख आता है कि चैत्र रथवन या चरित्रवन में ताड़का वध से प्रसन्न होकर विश्वामित्र ने राम को दिव्यास्त्र दिए थे।

मदन गुप्ता सपाटू



14 अप्रैल को दोपहर 2 बजकर 9 मिनट पर सूर्य का मेष राशि और अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश होगा। इसके साथ ही मीन खरमास भी समाप्त हो जाएगा। मेष राशि में सूर्य को परम उच्च माना जाता है। ऐसे में यह राशि परिवर्तन पूरी दुनिया के लिए शुभ रहेगा। सभी राशियों पर इसका प्रभाव होगा। कुछ राशियों के लिए यह शुभ रहेगा, जबकि कुछ राशियों के जातकों के लिए परेशानी बढ़ सकती है...

मेष : ज्यादा मेहनत करनी पड़ सकती है। भूमि, भवन आदि की खरीद-बिक्री करते समय सावधानी रखें। धोखा होने की भी संभावना है। संतान की ओर से कोई शुभ समाचार महीने के आखिर में मिल सकता है। माता-पिता की मदद से जमीन या भवन संबंधी फायदा आपको मिल सकता है।

वृष : सरकारी काम में किसी की मदद मिल सकती है। कोई महत्वपूर्ण फैसला ले सकते हैं। सेहत को लेकर सावधान रहना होगा। पेट, छाती से जुड़ी समस्या हो सकती है। विद्यार्थियों को ज्यादा मेहनत करनी पड़ सकती है।

मिथुन : धन लाभ हो सकता है। कोई अच्छी खबर भी मिल सकती है। कुछ नया करने की इच्छा मन में रहेगी। मौसमी बीमारी से परेशान हो सकते हैं। अधिकारियों से अनबन होने की संभावना बन रही



है। कार्य की अधिकता से या योजनाओं पर काम नहीं होने से परेशान हो सकते हैं। कोई गलत फायदा उठा सकता है। **कर्क :** शुरुआती दिनों में आपकी कमाई ज्यादा नहीं होगी और खर्च बढ़ सकते हैं। करियर में आगे बढ़ने के मौके तो मिल सकते हैं, लेकिन उलझनें भी बढ़ी हुई रहेंगी। किसी बड़े काम की जिम्मेदारी मिल सकती है। आसपास या साथ काम करने वालों से मदद नहीं मिलेगी। वाहन सावधानी से चलाएं।

सिंह : सोचे हुए काम समय पर पूरे हो सकते हैं। नौकरी और बिजनेस में कुछ नया करने का मन हो सकता है। इनसे जुड़ा कोई बड़ा फैसला आप ले सकते हैं। सोचे हुए काम में देरी होने से आप परेशान भी हो सकते हैं। इन दिनों अधिकारियों और अपने से बड़े

लोगों से मुलाकात होने की संभावना है।

कन्या : लेन-देन और निवेश के मामलों में बड़े फैसले ले सकते हैं। पारिवारिक मामलों में संभलकर रहना होगा। सोच-समझकर बोलें। किसी से विवाद भी हो सकता है। **तुला :** बिजनेस में फायदा बढ़ सकता है। नौकरीपेशा लोगों को आगे बढ़ने के मौके मिल सकते हैं। इन दिनों में किए गये कार्यों से आने वाले दिनों में फायदा मिल सकता है। संतान संबंधी जरूरी मामले निपटाने में आपका समय बीतेगा। भाइयों या दोस्तों के साथ विवाद होने की संभावना है। इस महीने खर्च बढ़ सकता है।

वृश्चिक : कुछ मामलों में आपको किस्मत का साथ नहीं मिल पाएगा। दौड़-भाग ज्यादा करनी पड़ सकती है। बिजनेस से जुड़े नये एग्रीमेंट हो

सकते हैं। इन दिनों कई मामलों में संभलकर रहना पड़ेगा।

धनु : बिजनेस में फायदा होने के योग बन रहे हैं। नौकरीपेशा लोगों को आगे बढ़ने के मौके मिल सकते हैं। नये कार्यों की जिम्मेदारी आपको मिल सकती है। रुका हुआ पैसा मिल सकता है। पुराने निवेश में भी धन लाभ हो सकता है। नये लोगों से मुलाकात हो सकती है और संबंध भी अच्छे बनेंगे।

मकर : कई चिंताएं एकसाथ खत्म हो सकती हैं। धन लाभ होगा। आप निवेश करने का मन बना सकते हैं। सेहत के मामलों में आपको संभलकर रहना होगा।

कुंभ : नौकरी और बिजनेस के मामलों में यह महीना उतार-चढ़ाव वाला हो सकता है। कामकाज में मन नहीं लगेगा। मेहनत का फायदा नहीं मिलने से दुखी हो सकते हैं। नये बिजनेस की योजनाएं इस महीने बन सकती हैं। कहीं पैसा निवेश करने की सोच रहे हैं तो किसी अनुभवी से सलाह जरूर लें। सेहत के मामले में भी संभलकर रहना होगा। इस महीने संतान और माता की सेहत को लेकर परेशान हो सकते हैं।

मीन : महीना आपके सामान्य रहेगा। सोचे हुए काम पूरे होंगे लेकिन कई मामलों में देरी भी हो सकती है। आसपास या साथ काम करने वालों से अनबन हो सकती है। नया काम तो मिलेगा लेकिन उसमें मेहनत ज्यादा करनी पड़ सकती है और मेहनत का फायदा भी कम ही मिल पाएगा। (राशिफल चंद्र राशि पर आधारित)

कुंडली में सूर्य को मजबूत बनाते हैं ये उपाय

■ सुबह जल्दी उठकर नहायें और कोई लाल कपड़ा पहनें। तांबे के लोटे में पानी भरें, उसमें लाल चंदन, थोड़ा कुमकुम और लाल फूल की पतियां डालें। पूर्व की तरफ मुंह करके दोनों हाथों से लोटे को सिर से ऊपर उठा कर धीरे-धीरे जल की धारा बनाकर 7 बार में जल चढ़ाएं। ध्यान रखें कि नीचे कोई बर्तन या बाल्टी रख लें, ताकि पानी उसमें गिरे और बाद में उस पानी को किसी गमले, पौधे या पेड़ पर डालें। सूर्य को अर्घ्य देते समय गायत्री मंत्र का जाप करते रहें। या सिर्फ ॐ सूर्याय नमः या ॐ आदित्याय नमः का जाप करते रहें। जरूरतमंदों को गेहूं, गुड़ और चांदी की कोई वस्तु दान करना शुभ माना जाता है। इस दान से स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का भी निवारण होता है।

■ सूर्योदय से पहले उठें। सूर्यास्त के समय सोने से बचें। इस समय सोने से आलस्य बढ़ता है। घर के बड़ों का अपमान न करें।

■ रविवार के दिन देसी छांड, मसूर की दाल, सौंफ, छुआरे, शहद का दान करें। नारियल, सरसों और बादाम का भी दान देना चाहिए।

■ रविवार का उपवास रखें। नमक का त्याग करना चाहिए।

■ जरूरतमंद, दुष्टहीन लोगों को दान दें और खाना बांटें।

■ बंदरों को गुड़, चना और भुनी हुई गेहूं, शकर मिलाकर खिलाएं।

■ भूरे रंग की गाय की सेवा करें। दान या तोहफे के रूप में चांदी या सफेद वस्तु न लें।

■ रविवार के दिन धार्मिक स्थान पर क्षमतानुसार दान करें।

■ घर के पवित्र स्थान पर चांदी की डिब्बी में गंगाजल रखें।

धर्म वाक्य

तिनका कबहुं ना निदिये, जो पांव तले होय। कबहुं उड़ आंखें पड़े, पीर धानेरी होय॥

एक छोटे से तिनके की भी कभी निंदा न करो जो तुम्हारे पांवों के नीचे दब जाता है। यदि कभी वह तिनका उड़कर आंख में आ गिरे तो कितनी गहरी पीड़ा होती है।

गारी ही सो ऊफने, कलह कर और भींच। हरि चले सो साधु है, लागि चले तो नीच॥

गाली से झगड़ा सन्ताप एवं मरने मारने तक की बात आ जाती है। इससे अपनी हार मानकर जो विरक्त हो चलता है, वह संत है, और गाली गलीच एवं झगड़े में जो व्यक्ति पड़ता है, वह नीच है।

बोली एक अनमोल है, जो कोई बोले जानि, हिये तराजू तौलि के, तब मुख बाहर आनि।

यदि कोई सही तरीके से बोलना जानता है तो उसे पता है कि वाणी एक अमूल्य रत्न है। इसलिए वह हृदय के तराजू में तोलकर ही उसे मुंह से बाहर आने देता है।

ते दिन एक अकरथ ही, संगत भई न संग। प्रेम बिना पशु जीवन, भक्ति बिना भगवंत।

कबीरदास जी कहते हैं कि अब तक जो समय गुजरा है वो व्यर्थ गया, ना कभी सज्जनों की संगति की और ना ही कोई अच्छा काम किया। प्रेम और भक्ति के बिना इंसान पशु के समान है और भक्ति करने वाले इंसान के हृदय में भगवान का वास होता है।

आवत गारी एक है, उलटत होय अनेक। कई कबीर नहि उलटिये, वही एक की एक।

कबीर जी कहते हैं कि जब गाली आती है तो एक ही होती है पर उसका जवाब देने पर उसकी संख्या बढ़ती जाती है।

जहां आपा तहां आपद, जहां संशय तहां रोग। कह कबीर यह क्यों भिटे, चारों धीरज रोग।

कबीर कहते हैं कि जहां पर अहंकार होता है, वहां पर अनेक प्रकार की परेशानियां होती हैं। और जहां संशय होता है वहां रोग होता है। समझ नहीं आता ये चारों रोग (अभिमान, आपदा, संशय, शोक) कैसे दूर होंगे।

व्रत-पर्व

12 अप्रैल : ईस्टर संडे **13 अप्रैल :** देविका स्नान (ऊधमपुर) वैशाख संक्रांति (30 मुहूर्त), बैसाखी पर्व (पंजाब)

15 अप्रैल : शीतलाष्टमी व्रत, बुधाष्टमी

18 अप्रैल : वसुंधिनी एकादशी व्रत, श्री वल्लभाचार्य जयंती

-सत्यव्रत बेंजवाल